।। श्रीहरिः ।।

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य के सम्प्रदाय प्रमाण

उत्सव तथा व्रतन की टीप

विक्रम संवत् २०८१ पिंगल नाम संवत्सरे ई. स. 2024-2025

श्री वल्लभाब्द ५४६ - ५४७ शालिवाहन शके १९४६ क्रोधी नाम संवत्सरे

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रधानपीठस्थित

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज की आज्ञासूं प्रकाशित

प्रकाशक : विद्याविभागाध्यक्ष, मन्दिर मण्डल, श्री नाथद्वारा

श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत / तीज तेरस एक, पंचमी पूनो एक

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मृ.	महिना तिथिन के फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहोत सुख होय, क्लेश न होय, अर्थ पूर्ण होय
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभरत होय, अशुभ, जीवनाश होय
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थपूर्ण होय, कामनापूर्ण होय
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश होय, जीव नाश होय, कुशल सूं घर नहीं आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ होय, मित्र मिले, व्याधि मिटे
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	महाचिन्ता होय, वियोग कदाचित् घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौभाग्य पावे, रत्न सहित भलीभांति सूं घर आवे
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	मिलवो न होय, बहुत बुरो होय, जीवनाश होय
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	आशा पूर्ण होय, सौभाग्य पावे, कामना सिद्ध होय
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य पावे, दिन बहुत लगे, कुशल सूं घर आवे
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश होय, जीवनाश नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन को लाभ होय

टिप्पणी व पुस्तकें मिलने का स्थान :- श्री गोवर्धन पुस्तकालय, नक्कारखाना चौक, खर्च भण्डार के पीछे, नाथद्वारा - 313301 (राजस्थान)

गणितकर्ता : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री - 9414473016

सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।
श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।

निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।
सर्वदा ध्यात्म तल्लीनं, श्रीमन्तं प्रियदर्शनम्।
इन्द्रदमनमाचार्यं, पीठाध्यक्षं नमाम्यहम्।।
आर्त्तत्राण प्रतिज्ञाय शुद्धाद्वैतावलम्बिने।
श्रीनाथ पीठाधिष्ठात्रे राकेशाय वयं नुमः।।

प्रति १,००,००० *{न्योछावर १०/- रुपया}*

❀ निवेदन ❀

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के पृष्ठ २८ से ३४ तक सुबोधिनी जी के उपदेश प्रकाशित किये है। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मँगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष
विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

चैत्र शुक्लपक्षः

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	9	अप्रेल, सन् 2024 संवत्सरोत्सवः। इष्टिः।
२	बुध	10	
३	गुरु	11	गणगौरी। (चूंदड़ी गणगौर)
४	शुक्र	12	पंचरंगी लहरियाँ (हरि गणगौर)
५	शनि	13	गुलाबी गणगौर, मेष संक्रान्तिः। सतुआ भोग में पुण्यकाल मध्याह्न से लेकर सूर्यास्त पर्यन्त है। तामे भी संक्रान्ति के पास के दो घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल है। अबके यह संक्रान्ति ५ शनि कूं रात्रि के ६ बजके ५ मिनिट पर बैठी है। तासूं पुण्यकाल आज मान्यो जायेगो। श्रीकूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने।
६	रवि	14	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५) केसरी गणगौर एवं यमुना छट्ठ।
७	सोम	15	
८	मंगल	16	
९	बुध	17	रामनवमी व्रतम्।
१०	गुरु	18	रामनवमी व्रत की पारणा।
११	शुक्र	19	कामदा एकादशी व्रतम्। श्रीवल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
१२	शनि	20	
१३	रवि	21	
१४	सोम	22	
१५	मंगल	23	

वल्लभाब्द ५४६	वैशाख (गु. चैत्र) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	24	इष्टिः।
१	गुरु	25	
२	शुक्र	26	
३	शनि	27	
४	रवि	28	
५	सोम	29	
६	मंगल	30	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सवः, सप्तमी को क्षय होयवे सूं आज।
८	बुध	1	मई
९	गुरु	2	
१०	शुक्र	3	पांच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११	शनि	4	वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्रीवल्लभाचार्यजी (श्रीमहाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५४७ को प्रारम्भः।
१२	रवि	5	
१३	सोम	6	
१४	मंगल	7	
३०	बुध	8	इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	वैशाख शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	गुरु	9	
३	शुक्र	10	अक्षय तृतीया जलकुम्भदानम्, चन्दनयात्रा त्रेतायुगादि।
४	शनि	11	
५	रवि	12	
६	सोम	13	
७	मंगल	14	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६९०)
८	बुध	15	
८	गुरु	16	
९	शुक्र	17	
१०	शनि	18	
११	रवि	19	मोहिनी एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	२०	
१३	मंगल	21	
१४	बुध	22	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम्।
१५	गुरु	23	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	24	इष्टिः। आज रात्रि के ३ बजके १७ मिनिट सूं लेके ज्येष्ठ शुक्ल १ शुक्र पिछली रात्रि के १ बजके ६ मिनिट तक सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है, तांसू इन दिनन मे श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
२	शनि	25	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत।
३	रवि	26	कली के शृंगार को आरम्भः।
४	सोम	27	
५	मंगल	28	
६	बुध	29	
७	गुरु	30	
८	शुक्र	31	
९	शनि	1	जून
११	रवि	2	
१२	सोम	3	अपरा एकादशी व्रतम्।
१३	मंगल	4	
१४	बुध	5	
३०	गुरु	6	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	ज्येष्ठ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	7	इष्टिः।
२	शनि	8	
३	रवि	9	
४	सोम	10	
५	मंगल	11	श्री के नाव को मनोरथ।
६	बुध	12	
७	गुरु	13	
८	शुक्र	14	
९	शनि	15	
१०	रवि	16	श्री गंगादशमी, गंगादशहरा, श्री यमुनाजी को उत्सव माने है।
११	सोम	17	
११	मंगल	18	निर्जला एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	19	
१३	गुरु	20	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (१९००), स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।
१४	शुक्र	21	ज्येष्ठाभिषेक (स्नानयात्रा)।
१५	शनि	22	इष्टिः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः	विक्रमाब्द २०८१

तिथि	वार	दि.	उत्सव
२	रवि	23	
३	सोम	24	
४	मंगल	25	
५	बुध	26	
६	गुरु	27	
७	शुक्र	28	
८	शनि	29	
९	रवि	30	
१०	सोम	1	जुलाई
११	मंगल	2	योगिनी एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	3	
१३	गुरु	4	
३०	शुक्र	5	तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५)

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	आषाढ़ शुक्लपक्षः	विक्रमाब्द २०८१

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	6	इष्टिः।
२	रवि	7	रथयात्रा।
३	सोम	8	
३	मंगल	9	
४	बुध	10	
५	गुरु	11	श्री द्वारकाधीश जी को पाटोत्सवः।
६	शुक्र	12	कसूंभा छठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी बिराजे सो उत्सव तथा तिलकायित **श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी)** महाराज गादी बिराजे (२०५७)
७	शनि	13	
८	रवि	14	
९	सोम	15	
१०	मंगल	16	बैंगन दशमी।
११	बुध	17	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्य नियमारम्भः। कली के शृंगार पूर्ण, पूज्यपाद ति. महाराज श्री की आज्ञा से परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किया जा सकेगा।
१२	गुरु	18	
१३	शुक्र	19	
१४	शनि	20	
१५	रवि	21	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्य नियमारम्भः। एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	22	इष्टिः। हिन्दोलारम्भः
२	मंगल	23	
३	बुध	24	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः। चतुर्थी को क्षय होयवे सूं आज।
५	गुरु	25	
६	शुक्र	26	
७	शनि	27	
८	रवि	28	जन्माष्टमी की बधाई।
९	सोम	29	
१०	मंगल	30	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेश जी महाराज को उत्सव, (हाण्डी) उत्सव (१७६३)।
११	बुध	31	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	1	अगस्त
१३	शुक्र	2	
१४	शनि	3	
३०	रवि	4	हरियाली अमावस।

वल्लभाब्द ५४७	श्रावण शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	5	इष्टिः।
२	मंगल	6	
३	बुध	7	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४	गुरु	8	
५	शुक्र	9	नाग पंचमी।
६	शनि	10	
७	रवि	11	
७	सोम	12	
८	मंगल	13	
९	बुध	14	सात स्वरूप को उत्सव, नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१०	गुरु	15	
११	शुक्र	16	पुत्रदा एकादशी व्रतम्। पवित्रारोपणं सायं उत्थापन में याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत।
१२	शनि	17	गुरुन को पवित्रा धरावने।
१४	रवि	18	श्री विट्ठलेशराय जी महाराज को उत्सव (१६५७), ऋग्वेदीन की श्रावणी।
१५	सोम	19	रक्षाबन्धनं सायं उत्थापन में, गुसांई जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२), आपस्तम्भ हिरण्य केशीय बौधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीन की श्रावणी।

वल्लभाब्द ५४७	भाद्रपद (गु. श्रावण) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	20	इष्टिः। गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धन लाल जी महाराज को उत्सव (१९१७), हेम हिन्दोला।
२	बुध	21	
३	गुरु	22	कज्जली तीज, हिन्दोला विजय सायं संध्या में।
४	शुक्र	23	
५	शनि	24	
७	रवि	25	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव।
८	सोम	26	जन्माष्टमी व्रतम्।
९	मंगल	27	नन्द महोत्सव।
१०	बुध	28	
११	गुरु	29	अजा एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	30	
१३	शनि	31	
१४	रवि	1	सितम्बर, काकावल्लभजी को उत्सव (१७०३)।
३०	सोम	2	सोमवती अमावस योग अहोरात्र, कुशग्रहणी अमावस।
३०	मंगल	3	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४७	भाद्रपद शुक्लपक्ष		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	4	राधाष्टमी की बधाई।
२	गुरु	5	सामवेदीन की श्रावणी।
३	शुक्र	6	
४	शनि	7	गणेश चतुर्थी।
५	रवि	8	द्वितीय स्वरूपोत्सव, ऋषिपंचमी।
६	सोम	9	ति. श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव (१७४४)।
७	मंगल	10	
८	बुध	11	राधाष्टमी।
९	गुरु	12	
१०	शुक्र	13	
११	शनि	14	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी), नवलक्ष ग्रंथकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव (१७१४)।
१२	रवि	15	वामन द्वादशी।
१३	सोम	16	
१४	मंगल	17	
१५	बुध	18	सांझी को आरम्भः। श्राद्धपक्ष को आरम्भ ताको निर्णय पृ. २६ एवं श्राद्धपक्ष को संकल्प पृ. २७ पर लिख्यो है। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४७	आश्विन (गु.भाद्रपद) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२	गुरु	19	
३	शुक्र	20	
४	शनि	21	
५	रवि	22	श्री हरिरायजी को उत्सव (१६४७)
६	सोम	23	
७	मंगल	24	
८	बुध	25	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव (१५८७)।
९	गुरु	26	
१०	शुक्र	27	
११	शनि	28	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
१२	रवि	29	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव (१५६७)।
१३	सोम	30	श्री गुसांईजी के तीसरे लाल जी श्री बालकृष्णजी को उत्सव (१६०६)।
१४	मंगल	1	अक्टूबर
३०	बुध	2	सर्वपितृ अमावस, कोट की आरती और सांझी की समाप्ति।

वल्लभाब्द ५४७	आश्विन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	3	इष्टिः। नवरात्रारम्भः, मातामह श्राद्ध।
२	शुक्र	4	
३	शनि	5	
३	रवि	6	
४	सोम	7	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१६५४)।
५	मंगल	8	
६	बुध	9	सरस्वती पूजनारम्भः।
७	गुरु	10	
८	शुक्र	11	
९	शनि	12	दशहरा (विजयदशमी), सरस्वती विसर्जनम्।
१०	रवि	13	श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
११	सोम	14	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१३	मंगल	15	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः।
१४	बुध	16	शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)।
१५	गुरु	17	कार्तिक स्नानारम्भः।

वल्लभाब्द ५४७	कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	18	इष्टिः।
२	शनि	19	
३	रवि	20	
५	सोम	21	
६	मंगल	22	
७	बुध	23	
८	गुरु	24	
९	शुक्र	25	
१०	शनि	26	
११	रवि	27	
११	सोम	28	रमा एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	29	
१३	बुध	30	धनतेरस।
१४	गुरु	31	रूप चतुर्दशी (अभ्यंग), दीपावली (दीपोत्सव), हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्), कान जगाई।
३०	शुक्र	1	नवम्बर, अन्नकूटोत्सव। गोवर्द्धन पूजा।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	कार्तिक शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	2	इष्टिः। गुर्जराणां २०८१ वर्षारम्भः।
२	रवि	3	यम द्वितीया (भाईदूज)।
३	सोम	4	
४	मंगल	5	
५	बुध	6	
६	गुरु	7	
७	शुक्र	8	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३)।
८	शनि	9	गोपाष्टमी।
९	रवि	10	अक्षयनवमी। कृतयुगादि। कूष्माण्डदानम्।
१०	सोम	11	
११	मंगल	12	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं संध्या में।
१२	बुध	13	श्री गुसांईजी के प्रथमलालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलालजी श्री रघुनाथजी को उत्सव (१६११)।
१३	गुरु	14	ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)। चतुर्दशी को क्षय होयवे सूं आज।
१५	शुक्र	15	चार स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत। चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः	विक्रमाब्द २०८१

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	16	इष्टिः। व्रतचर्या अथवा गोपमासारम्भः।
२	रवि	17	
३	सोम	18	
४	मंगल	19	छः स्वरूप को उत्सव। तिलकायित श्री दाऊजी (महाराज) कृत।
५	बुध	20	
६	गुरु	21	
७	शुक्र	22	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव (१६८४)
८	शनि	23	श्री गुसांई जी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव (१५६६)।
९	रवि	24	
१०	सोम	25	घटा को आरम्भ (हरिघटा)।
११	मंगल	26	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	27	श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निज मंदिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३)।
१३	गुरु	28	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)।
१३	शुक्र	29	
१४	शनि	30	
३०	रवि	1	दिसम्बर, श्यामघटा। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४७	मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः	विक्रमाब्द २०८१

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	2	
२	मंगल	3	दूज को चन्दा।
३	बुध	4	
४	गुरु	5	
५	शुक्र	6	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सव।
६	शनि	7	
७	रवि	8	श्री गुसांईजी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)।
८	सोम	9	सातस्वरूप को उत्सव। श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत। श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई, नवमी का क्षय होयवे सूं आज।
१०	मंगल	10	लालघटा
११	बुध	11	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	12	
१३	शुक्र	13	
१४	शनि	14	
१५	रवि	15	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास की समाप्ति। धनुर्मासारम्भः।

वल्लभाब्द ५४७	**पौष (गु. मार्गशीष) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०८१	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	16	इष्टिः। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव (२००५)।
२	मंगल	17	
३	बुध	18	
४	गुरु	19	
५	शुक्र	20	
६	शनि	21	
७	रवि	22	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव (१६२५)।
८	सोम	23	
९	मंगल	24	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथजी को उत्सव (१५७२)।
१०	बुध	25	
११	गुरु	26	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१७६९)।
१२	शुक्र	27	
१३	शनि	28	
१४	रवि	29	
३०	सोम	30	गोस्वामी तिलक श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के पुत्र चि.गो. १०५ **श्री भूपेशकुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन (२०३७)। सोमवती अमावस।

वल्लभाब्द ५४७	**पौष शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०८१	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	31	इष्टिः।
२	बुध	1	जनवरी सन् २०२५ को प्रारम्भः।
३	गुरु	2	
४	शुक्र	3	
५	शनि	4	
६	रवि	5	नित्य लीलास्थ गो. श्री १०८ श्री दामोदरलाल जी महाराज को उत्सव (१९५३)।
७	सोम	6	
८	मंगल	7	
९	बुध	8	
१०	गुरु	9	
११	शुक्र	10	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	11	
१४	रवि	12	
१५	सोम	13	माघ स्नानारम्भः। भोगी।

वल्लभाब्द ५४७	माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः	विक्रमाब्द २०८१

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	14	इष्टिः। मकर संक्रान्तिः। तिलवा राजभोग में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रान्ति १ मंगल कूं प्रातः ८ बजके ५६ मिनिट पर बैठे है तासूं पुण्यकाल आज प्रातः ८ बजके ५६ मिनिट सूं लेके सायं ४ बजके ५६ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी संक्रान्ति के पास के २ घंटा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण। धनुर्मास की समाप्ति।
२	बुध	15	
३	गुरु	16	
४	शुक्र	17	
५	शनि	18	
५	रवि	19	
६	सोम	20	
७	मंगल	21	पीली घटा।
८	बुध	22	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (१७११)।
९	गुरु	23	
१०	शुक्र	24	
११	शनि	25	षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिल की वस्तु अवश्य भोग धरनो। तिल के दान भक्षणादि करने।
१२	रवि	26	
१३	सोम	27	
१४	मंगल	28	
३०	बुध	29	

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	माघ शुक्लपक्षः	विक्रमाब्द २०८१

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	गुरु	30	इष्टिः।
२	शुक्र	31	
३	शनि	1	फरवरी
४	रवि	2	श्री मुकुन्दरायजी का पाटोत्सवः। बसन्त पंचमी। पंचमी को क्षय होयवे सूं आज।
६	सोम	3	
७	मंगल	4	
८	बुध	5	
९	गुरु	6	
१०	शुक्र	7	
११	शनि	8	जया एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	9	
१३	सोम	10	
१४	मंगल	11	
१५	बुध	12	माघ स्नान की समाप्तिः। होरी डांडो दण्डारोपणं, आज सूर्यास्तान्तरम् सायं ६ बजके २६ मिनिट पश्चात्, याही समय धमार को आरम्भ, रोपणी को उत्सव।

श्रीनाथजी मन्दिर

वल्लभाब्द ५४७	फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	13	इष्टिः।
२	शुक्र	14	
३	शनि	15	
४	रवि	16	
५	सोम	17	
६	मंगल	18	
६	बुध	19	
७	गुरु	20	श्रीनाथजी को पाटोत्सवः।
८	शुक्र	21	
९	शनि	22	
१०	रवि	23	
११	सोम	24	विजया एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	25	
१३	बुध	26	
१४	गुरु	27	अमावस को योग प्रातः ८ बजके ५६ मिनिट सूं।

वल्लभाब्द ५४७	फाल्गुन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	28	इष्टिः।
२	शनि	1	मार्च
३	रवि	2	
४	सोम	3	
५	मंगल	4	
६	बुध	5	
७	गुरु	6	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। **श्री गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज** को जन्मदिन (२००६)
८	शुक्र	7	होलिकाष्टकारम्भः।
९	शनि	8	
१०	रवि	9	
११	सोम	10	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	11	
१३	बुध	12	
१४	गुरु	13	होली, होलिका प्रदीपनं १५ शुक्र के सूर्योदयात् ६ बजके ४७ मिनिट सूं पूर्व।
१५	शुक्र	14	दोलोत्सव (डोल), धूलिवन्दन (धुरेण्डी)।

वल्लभाब्द ५४७	चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०८१
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	15	इष्टिः। द्वितीया पाट।
२	रवि	16	
३	सोम	17	
४	मंगल	18	
५	बुध	19	
६	गुरु	20	
७	शुक्र	21	गो.ति.१०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज के पौत्र गो.चि.१०५ श्री भूपेश कुमार जी (श्री विशाल बावा साहब) के पुत्र **गो.चि. श्री लाल गोविन्दजी (श्री अधिराज बावा)** को जन्मदिन (२०७५)
८	शनि	22	
९	रवि	23	
१०	सोम	24	
११	मंगल	25	
१२	बुध	26	पापमोचिनी एकादशी व्रतम्।
१३	गुरु	27	
१४	शुक्र	28	
३०	शनि	29	वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्।

श्राद्धपक्ष को निर्णय

भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५, बुधवार से आश्विन शुक्ल पक्ष १, गुरुवार तक (दिनांक 18.09.2024 से 03.10.2024 तक)

तिथि	**वार**	**दि.**	**श्राद्ध**
भा.शु.१५ (पूर्णिमा) आ.कृ.१	बुध	18.09	प्रतिपदा (एकम्) को श्राद्ध
आ.कृ.२	गुरु	19.09	द्वितीया (दूज) को श्राद्ध
आ.कृ.३	शुक्र	20.09	तृतीया (तीज) को श्राद्ध
आ.कृ.४	शनि	21.09	चतुर्थी (चौथ) को श्राद्ध एवं पिण्डरहित भरणी श्राद्ध
आ.कृ.५	रवि	22.09	पंचमी (पाचम) को श्राद्ध
आ.कृ.६	सोम	23.09	षष्ठी (छठ) एवं सप्तमी (सातम) को श्राद्ध
आ.कृ.७	मंगल	24.09	अष्टमी (आठम) को श्राद्ध एवं व्यतीपात का श्राद्ध
आ.कृ.८	बुध	25.09	नवमी (नम) को श्राद्ध, अविधवा नवमी
आ.कृ.९	गुरु	26.09	दशमी (दशम) को श्राद्ध
आ.कृ.१०	शुक्र	27.09	एकादशी (ग्यारस) को श्राद्ध
आ.कृ.११	शनि	28.09	मघा श्राद्ध
आ.कृ.१२	रवि	29.09	द्वादशी (बारस) को श्राद्ध, सन्यासीन को श्राद्ध व मघा श्राद्ध
आ.कृ.१३	सोम	30.09	त्रयोदशी (तेरस) को श्राद्ध
आ.कृ.१४	मंगल	01.10	चतुर्दशी (चौदस) निमित्तक घायलन को श्राद्ध, जल शस्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध
आ.कृ.३०	बुध	02.10	अमावस तथा सर्वपितृ को श्राद्ध
आ.शु.१	गुरु	03.10	मातामह श्राद्ध

विशेष : 1. जाकी मरण तिथि चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो प्रशस्त है।

2. सप्तमी मंगल कूं व्यतीपात योग होय वे सूं यह दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है। कोई भी तिथि को श्राद्ध रहि गयो होय या रही जायवे को सम्भव होय तो ताको श्राद्ध या दिवस करनो।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ॐ विष्णुः 3 श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रर्वत्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टा विंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे पिंगलनाम्नि एकाशीतिः अधिक द्विसहस्त्र संख्या के वैक्रमाब्दे शकानुसारेण क्रोधी नाम्नि संवत्सरे शरद ऋतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र, योगे, करणे अमुक राशि स्थिते कन्या राशि स्थिते श्रीसूर्ये वृषभ राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारण) एतेषां यथानाम् गोत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्रीविषये सभर्तृक सपत्न्याम् विधिना महालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैव सद्यः करिष्ये।

गणितकर्त्ता : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री, मो. 9414473016

भगवान् भक्ति से ही प्राप्त होते हैं

भगवान् भक्ति से ही प्राप्त होते हैं, इसलिए भक्ति के उद्रेक से शुकदेवजी उन भगवान् को अनेक बार नमन करते हुए उसी की प्रार्थना करते हैं। जो पूर्ण हैं, उन्हें जब भगवान् का दर्शन हो जाय तो उन्हें नमस्कार ही करना चाहिये तथा सत्पुरुष भी ऐसा ही करे इसकी शिक्षा देने के विचार से अथवा भगवान् के लिए नमस्कार के सिवाय और कोई कर भी क्या सकता है। जिनका आसन गरूड़ है उनके उससे बढ़कर और कौनसा आसन हो सकता है, लक्ष्मी जिसकी पत्नी हो उसको कोई सम्पत्ति क्या दे सकता है। जैसा कहा भी है ''किमासनन्ते गरुडासनाय' अतः भगवान् उस तरह के हैं, अतः जब हमें भगवान् का साक्षात्कार हो जाय तो उस तरह से नमस्कार ही हो सकता है। प्रार्थना से भी तो भगवद्दर्शनरूप प्रयोजन ही मांगने योग्य है और सब साधनों का फल भी भगवद्दर्शन ही है, यह इससे कहा गया। यहां श्री शुकदेवजी भगवान् के प्रत्यक्ष दर्शन करके ही नमन कर रहे हैं इसलिए 'ते' यह पद दिया है अर्थात् तुम्हारे लिए तस्मै उसके लिए ऐसा नहीं कहा। इससे बढ़कर और कोई प्रयोजन उद्देश्य नहीं है, यह सब शास्त्रों का सार है। सात्वताम् का अर्थ है सात् प्रत्यय से युक्त। 'तदधीनवचने सातिः' इस सूत्र से साति प्रत्यय होता है जैसे आत्मसात्। इस तरह व्याकरण के अनुसार सात् का अर्थ है अधीन, अतः सात्त्वताम् का अर्थ हुआ अधीन, जो कभी भी स्वतंत्र नहीं है किन्तु सदा भगवान् के ही अधीन है। उनके भगवान् ऋषभ हैं, पति है, स्वामी है। ऐसा होने से भगवान् का स्वामित्व भी यहां प्रयोजन रूप है। वह स्वामित्व नमन मात्र से ही तो होता है और जब भगवदधीनरूप लक्षण अधिक धर्म उसमें हो जाता है तो भगवान् उससे अपनी सेवा भी कराते हैं और

तदनन्तर दास्यभाव भी प्रदान करते हैं। यह प्रयोजन भी इसमें निरुपित होता है। जो ऐसा समझते हैं कि हम तो योग आदि के द्वारा ही उन भगवान् को प्राप्त कर लेंगे, वे कुयोगी है। 'कु' का अर्थ है पृथिवी अर्थात् वे पृथिवी में ही योगी है। जो पृथिवी पर स्थित है, वे ब्रह्माण्ड से भी पर में स्थित ऐसी वस्तु (भगवान्) को कैसे प्राप्त कर सकते हैं। कु का अर्थ कुत्सित भी होता है, इसलिए कुत्सित योग कुत्सित फल को ही दे सकता है अथवा भूमि पर स्थित जो फल है, उसी को देगा। इसलिए ऐसे योगियों को तो अणिमादि सिद्धि ही फलरूप में प्राप्त होती है, भगवान् प्राप्त नहीं होते। योग तो भगवान् के अधीन है। भगवान् स्वाधीन नहीं है किन्तु योग के ईश्वर हैं। अतः योग में ही जिनकी बुद्धि निश्चित है, ऐसी बुद्धि वालों के लिए तो भगवान् जिस दिशा में है, वह दिशा भी उनके लिए दूर है और उनके साधन तो उन्हें और भी दूर ले जाते हैं, जिससे भगवान् की दिशा बहुत ही दूर हो जाती है। इसलिए अन्य साधनों से साध्य यह प्रयोजन नहीं है, यह कहा गया। एक बार कुयोगी होने पर भी यदि फिर आगे उनमें दिव्य आदि योग हो जाय, तब तो प्राप्त हो भी सकते हैं। परन्तु जो बार-बार कुयोगी ही होते हैं, उसके लिए तो भगवत्प्राप्ति की कोई आशा ही नहीं है, इसे मुहुःकुयोगिनाम् से बताया है। प्राप्ति की आशा के अभाव को बताने के लिए ही तो विदूरकाष्ठाय बहुत दूर उनके लिए दिशा है। मुहुः इस पद से उनमें साधनों का अभाव भी सूचित होता है, इसलिए भगवान् केवल भक्ति से ही प्राप्त होते हैं, यह बात अन्वय और व्यतिरेक के द्वारा सिद्ध की जा चुकी है। अन्वय कहते हैं, उसके होने पर हो अर्थात् भक्ति के होने पर भगवान् का प्राप्त होना और व्यतिरेक कहते हैं। उसके न होने पर उसका न होना अर्थात् भक्ति के न होने पर भगवान्

की प्राप्ति का न होना। भगवान् की एक कोई सिद्धि भी है, जिसको राधस् शब्द से कहते हैं। वैसी राधस सिद्धि कहीं अन्यत्र है नहीं और उस राधस् शक्ति से बढ़कर भी कोई अन्य सिद्धि नहीं है। उस राधस् सिद्धि से भगवान् अपने घर में ही रमण करते हैं। भगवान् का घर है अक्षरब्रह्म, उसी में राधस् सिद्धि से भगवान् रमण करते हैं। रस्यन् का अर्थ है अपने ही अन्दर रहने वाले रस को उस राधस सिद्धि के सम्बन्ध से अभिव्यक्त प्रकट करते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि भगवान् स्वरूप स्थिति के बिना अन्यत्र रमण नहीं करते। भगवत् सम्बन्धी रस वहीं प्राप्त हो सकता है, जहां भगवत्स्वरूप की स्थिति होती है। पर (अक्षरब्रह्म) भी भगवान् का ही है और रस का साधन है। निरस्तशाम्यातिशया राधस् सिद्धि। इसलिए दूसरों के लिए उस रस की प्राप्ति सर्वथा दुर्लभ है। परन्तु जो उस घर का सेवक होता है उसके लिए तो उस रस की प्राप्ति सुलभ है। वह भगवान् अपने घर (अक्षरब्रह्म) में उस (राधस् सिद्धि) को ले जाकर रमण करता है। इस युक्ति से केवल भक्ति के द्वारा ही वह रस प्राप्त हो सकता है। स्वधामनि इस पद से भगवान् का रमण अपने घर में ही बताया है, अतः अन्य कोई वहां जा नहीं सकता अथवा खड़ा नहीं रह सकता, यह सूचित होता है। ब्रह्मत्व होने से उसमें अहेयता है। निरन्तर रस के प्रवाहित होने से फिर सायुज्य प्राप्ति की आवश्यकता ही नहीं रहती है। इसलिए ऐसी भक्ति के अभाव में केवल नमन ही करना चाहिये। अतः वैसे भगवान् के लिए मेरा नमन है, ऐसा कहा। जो अपने ही धाम में राधस् नाम की सिद्धि से ही जो रमण करते हैं, उन भगवान् के लिए मेरा नमन है। इस तरह से भगवान् को समझकर नमन करना भी प्रयोजन है, इसलिए शुकदेवजी आदि ने नमन में ही उसका पर्यवसान सूचित किया।

भगवान् का कीर्त्तन संसारी लोगों के पापों को दूर करने में समर्थ है

संसारी लोगों के लिए कीर्त्तनादि बाह्य छः प्रकार की भक्ति तत्क्षण ही पाप का क्षय करती है। ईक्षण पादसेवन भक्ति से सिद्ध होता है। यहां पापक्षय के तारतम्य को निरूपण करने के लिए भिन्न क्रम का निरूपण है। उनमें कीर्त्तन अपने और दूसरों के सब पापों का निवारण करने वाला होने से श्रवण की अपेक्षा से भी इसमें श्रेष्ठता है, इसको बताने के लिए ही इसको यहां प्रथम रखा है। कीर्त्तन के अनन्तर उस कीर्त्तन का भी मूलभूत और कीर्त्तन का निर्वाहक केवल आत्मा में ही रहने वाला होते हुए भी आध्यात्मिक पापों को दूर करने वाला होने से अन्तःकरण को शुद्ध करता है, इसलिए स्मरण का निरूपण किया। इस तरह जब स्मरण और कीर्त्तन इन दोनों से प्रेम का उद्‌गम हो जाता है तो तब भगवान् के आगमन से अथवा भगवान् के पास जाने से भगवान् का ईक्षण भगवान् का पादसेवन होता है। सानुभाव ही है अधिष्ठान जिसका ऐसी भगवान् की प्रतिनिधिरूप प्रीति के कम होने पर भी वह प्रीति जीव को भगवान् से अलग नही होने देती, अतः उसे बाहर भगवान् के दर्शन होते हैं या भावना से अन्दर दर्शन होते हैं। उन भगवान् के दर्शन से आधिदैविक पाप की निवृत्ति होती है। 'यद्देवानां चक्षुषि आगो अस्ति' इस श्रुति में उस आधिदैविक पाप का निरूपण किया है। भगवान् के दर्शन से उनकी क्रूर दृष्टि मिट जाती है, अतः वह पाप दूर हो जाता है। ईक्षण पादसेवन के अनन्तर जो वन्दन भक्ति है, उसने भगवदीयापराध लक्षण दोष दूर होते हैं। वास्तव में तो जीव

भगवान् का सेवक होकर बहुत समय तक उनकी सेवा नहीं करता है इसलिए उनका सेवक धर्म के परित्याग से अधर्म होता है। वह दोष दर्शन के अनन्तर भगवान् का वन्दन करने से दूर हो जाता है। तदनन्तर भगवदोषों के मुख से जो भगवान् का माहात्म्य सुनते हैं, उससे सब वस्तुओं का यथार्थ ज्ञान हो जाता है, जिससे अज्ञानकृत पाप जो उसका मूलभूत है, वह मिट जाता है। तदनन्तर भगवान् का माहात्म्य जानकर प्रतिक्षण जो भगवान् की पूजा करता है, सत्कार करता है, वह भगवान् का पूजन या सत्कार भगवान् के मायारूप या व्यामोहनरूप पाप को दूर करता है। भगवान् की पूजा प्रपत्तिरूप है। इस प्रपति (आश्रय) में अनन्यता का अभाव होने से इसे प्रपत्तिरूप से कहा। अतः जो जीव भक्तिमार्ग में निविष्ट नहीं है, अन्यमार्गीय है, उनके लिए भी इस प्रकार से करने पर उन-उन पापों के दूर हो जाने से सर्वपापनिवृत्तिरूप फल हो जाता है। यह भगवत्कीर्त्ति ही सबका मूल है, इसलिए यह भगवत्कीर्त्ति सुभद्रा कल्याणकारिणी कही गई है। भद्र और अभद्र दोनों ही समान है। उन दोनों के अभद्र का नाश करने वाली होने से इसे सुभद्र कहते हैं। प्रथम श्रवण तो उस समय अन्दर प्रवेश करके आलोड़न के द्वारा पांच भौतिक देहादि से पापों को दूर करने में असमर्थ है इसलिए पहले श्रवण का निर्देशन करके कीर्त्तन का निर्देश किया। जिस भगवान् का कीर्त्तन, स्मरण, वंदन, पूजन संसारी लोगों के लिए कल्याणकारी है। कीर्त्तन तो उन पापों को दूर करने में समर्थ है, अतः उसे प्रथम कहा, ऐसा समझना चाहिये।

श्री सुबोधिनी पुष्पवाटिका में से चुनी हुई कुछ और सौरभपूर्ण कलियाँ

१. दस प्रकार की लीला वाले भगवान् का श्रवण करें।

२. स्मरण का फल महान् होने से भगवान् का सदा स्मरण करें।

३. अपना प्रयत्न (त्रिया शक्ति) अल्प है। जिसे भगवान् की सेवा के लिए रखा होने से उसका उपयोग अन्यत्र नहीं करना चाहिये।

४. जिस प्रकार भगवान् की सेवा करने से भगवान् के छः गुण हमारे में आते हैं, उसी प्रकार देहादि की सेवा करने से छः प्रकार के दोष - उत्पत्ति, नाश, दुःख, कर्म, परिताप और हीनता आते हैं।

५. सब साधनों का समावेश दो साधनों में होता है। भगवान् के भक्तों का संग साधने से अथवा भगवान् में रति (प्रेम) साधने से, यदि ये सिद्ध हो जावे तो अन्य कामना न करें।

६. साधक को भगवान् की कथा से प्रेम होता है। कथा के प्रेम में लगन हो तो उसे कथा कहने वाला भी मिलता है और भगवान् में प्रेम भी होता है।

७. गुरु वेदादि से ही उन (भगवान्) का ज्ञान होता है।

८. सत्पुरुषों का दुःख दूर करना ही भगवान् के अवतार का प्रयोजन है।

९. भगवान् के प्रसाद (कृपा) के लिए ही प्रार्थना करना उचित है। अन्य कुछ मांगना नहीं चाहिये। दूसरे से भी कुछ नहीं मांगना चाहिये।

१०. स्वामी कोपे या ना कोपे परन्तु उनकी प्रार्थना करनी, यह निर्विवाद है। इसलिए जिनके प्रति होय उनकी प्रार्थना करनी ही चाहिये। सर्वप्रथम भगवान् लक्ष्मीपति है, इसलिए लक्ष्मी की अंशरूप स्त्रियां प्रार्थना करती है तो वे क्रोधित नहीं होते हैं। इसी प्रकार स्नेह मार्ग का अनुसरण करने वाले अन्य भी प्रार्थना करते हैं तो उन पर क्रोध नहीं करते हैं।

११. जो भगवान् सब प्रमाणों से अतीत हैं तो भी सर्वत्र प्रसिद्ध है। उनको तो नमस्कार ही करना चाहिये अन्य कुछ नहीं। हे हरि, हे श्रीकृष्ण आप जैसे भी हो, आपको नमस्कार है, इस प्रकार नमस्कार करें।

१२. पात्र को दिया हुआ दान ही अनन्त गुण वाला होता है।

१३. देवताओं में सत्य और दैत्यों में असत्य रहता है।

१४. ईक्षण (देखना) पुष्टि है क्योंकि भगवान् से देखा हुआ पुष्ट होता है।

१५. जहां कार्य होता है, वहां साधन होना ही चाहिये परन्तु जहां साधन बिना ही कार्यसिद्धि होती है, तो वह परब्रह्म का स्वरूप है, ऐसे मानना चाहिये क्योंकि वह सर्वसमर्थ है।

१६. समर्थ का अवलम्बन हो तो ही मर्यादा का त्याग करें।

१७. सदानन्द (कृष्ण) रूप भगवान् स्वयं ही पुरुषार्थ रूप होकर ज्ञान आदि साधन की अपेक्षा नहीं रखते हैं।

१८. इस शास्त्र में ही मुख्य सिद्धान्त है कि बहुत प्रयत्न से जो भगवान् का कर्त्तव्य करते हैं वे मुख्य हैं। जो भगवान् की सेवा करते हैं, वे मध्यम है और जो स्वार्थवश भगवान् की सेवा करते हैं, वे अधम है।

१९. भगवान् की सब शक्तियों में इच्छाशक्ति उत्तम है, क्योंकि वह सबकी मूल है। अन्य तो उससे साध्य है इसलिए इसका ही यह प्रभाव है कि जिसमें मेरे (भगवान् के) लोक वैकुण्ठ का अवलोकन होता है।

२०. भगवान् का ज्ञान कहने में आवे तो भी कृपा के बिना वह प्राप्त नहीं होता है।

२१. जो पुरुषोत्तम का ध्यान करते हैं, वे ही उनकी दस प्रकार की लीला जानने में समर्थ होते हैं।

निवेदक : त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री, विद्या विभाग, मंदिर मण्डल, नाथद्वारा

वर्त्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरभाषानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा

फा.शु.७	गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज,** श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) के लालजी १
मार्ग.कृ.३०	चि.गो.श्री भूपेशकुमारजी **(श्री विशाल बावा),** चि.गो. श्री विशाल बावा के लालजी १
फा.कृ.७	गो.चि. लाल गोविन्दजी **(श्री अधिराज बावा)**
आ.कृ.१३	गो. कल्याणराय जी गो. कल्याणराय जी के लालजी २
पौ.कृ.६	चि. श्रीहरिरायजी
अश्वि.शु.६	चि. श्रीवागधीशजी
माघ शु.१३	चि.हरिरायजी के लालजी २ चि.श्री वदान्य राय जी
फा.शु.३	चि. द्विजराज जी
पौष शु.५	गो. श्री गोकुलोत्सव जी श्री गोकुलोत्सव जी के लालजी १
फा.शु.४	चि. श्री व्रजोत्सवजी चि. व्रजोत्सव जी के लालजी १
वै.शु.१२	चि. व्रजेश्वरजी
वै.कृ.४	गो. दिव्येशजी
	गो. श्री दिव्येश जी के लाल जी २
चै.शु.१४	चि. श्री प्रिय व्रजराय जी
का.शु.१०	चि. श्री अनुश्रुत जी

कांकरोली

ज्ये.शु.५	गो. पुरूषोत्तमजी
चै.कृ.४	गो. पीताम्बरजी
वै.कृ.६	गो. त्रिलोकीभूषणजी
	गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी २
का.कृ.६	गो. श्रीव्रजभूषणजी
का.शु.१०	गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी
	श्री पीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये.शु.१४	चि. व्रजालंकारजी

	गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
वै.कृ.१३	गो. चि. व्रजाभरणजी
	चि. व्रजाभरण जी के लालजी १
भा.शु.२	चि.रणछोड़ राय जी
आ.सु.६	गो. रविकुमारजी
	गो. रविकुमारजी के लालजी २
श्रा.सु.३०	चि. वितंस बावा
माघ व.४	चि. प्रियम बावा
पौ.सु.६	गो. संजीव कुमार जी गो. संजीव कुमार जी के लालजी १
मार्ग.कृ.४	चि. विट्ठलनाथजी

जतीपुरा

वै.कृ.६	गो. लालमणीजी लालमणीजी के लालजी २
श्रा.शु.६	चि. गो. मिलनकुमारजी
चै.शु.६	चि. द्वारकेशलालजी
	श्री मिलनकुमारजी के लालजी १
श्रा.कृ.२	चि. कृष्णास्य बावा

कोटा-कड़ी

भा.कृ.६	चि. व्रजेशकुमारजी
माघ.व.१०	गो. चि. घनश्यामलालजी
आसो.सु.१०	गो. दामोदरलालजी
चै.व.१२	गो. चि. वल्लभलालजी गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आषा.सु.८	चि. पुरूषोत्तमजी
	घनश्यामलालजी के लालजी २
फा.शु.७	गो.चि. कृष्णकुमारजी गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १
पौ.व.११	गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु.११	चि. कुंजेशकुमारजी गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २
मार्ग.व.२	गो.चि. गोविन्दरायजी
आश्वि.व.३	गो.चि. गोकुलमणीजी
आसो.व.३	गो. विनयकुमारजी
आषा.व.४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी १
चै.शु.१४	चि. पुलकित बाबा
श्रा.सु.७	गो. त्रिलोकीभूषणजी त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
ज्ये.कृ.१	राजीवलोचनजी
	व्रजेशकुमारजी के लालजी ३
चै.शु.६	चि यदुनाथजी चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. प्रद्युम्नजी
कार्ति.सु.१०	चि. द्वारकेशजी
कार्ति.सु.७	चि. जयदेवजी चि. जयदेवजी के लालजी १

मार्ग कृ.१३	चि. व्रजराजजी
	चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा.व.१२	चि. हरिरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
माघ कृ.१३	चि. गोकुलेश्वरजी
ज्ये.व.१०	चि. दर्शन कुमारजी
	चि. दर्शनकुमार जी के लालजी २
ज्ये.व.४	चि. व्रजाधीशजी
मा.कृ.७	चि. व्रजाधीपजी

कामवन

फा.सु.२	गो. श्री वल्लभलालजी गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २
भा.कृ.२	चि. श्री देवकीनंदनजी
श्रा.कृ.१०	चि. श्री विट्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ.कृ.१४	गो. श्री द्वारकेशलालजी गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २
फा.शु.३	चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा.कृ.१३	चि. श्री कन्हैयालालजी
	चि. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा.कृ.४	चि. श्री गोविन्दजी
का.शु.७	चि. श्री गोकुलचन्द्र जी
	चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का.शु.१०	चि. श्री जयदेवजी

कामवन/भावनगर

भा.शु.१	गो. श्री नवनीतलालजी
	गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का.शु.१	चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का.कृ.११	गो. मुरलीधर जी गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १
मार्ग.शु.४	चि. श्री जयदेवलालजी

चै.कृ.१३	गो. श्री रघुनाथलालजी गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २
मार्ग.शु.६	चि. श्री गिरधरजी
श्रा.कृ.५	चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

आष.सु.११	गो. ब्रजेशकुमारजी
	गो. ब्रजेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.व.३	गो. चि. अनिरूद्धजी चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
फा.कृ.६	चि. रमणजी (रसेश जी)
श्रा.व.३	गो. गोपाललालजी
आसो.व.१२	गो. कल्याणरायजी
चै.सु.१५	गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
	गो. रघुनाथजी के लालजी १
माघ सु.४	चि. योगेशकुमारजी चि. योगेशकुमारजी के लालजी २
आ.व.१३	चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा.कृ.३०	चि. व्रजपालजी
भा.सु.१४	गो. शिशिरकुमारजी
	गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो.व.४	चि. लालजी
	गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी १
भा.व.१	गो. चि. उपेन्द्रजी गो. चि. उपेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.५	चि. वल्लभलालजी
का.कृ.५	चि. घनश्यामलालजी

गोकुल

का.व.१०	गो. देवकीनन्दनजी गो. देवकीनन्दन के लालजी २
मा.व.३०	चि. वल्लभलालजी
का.सु.२	चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो.व.१४	गो. रघुनाथ जी
आसो.व.६	गो. ब्रजेशकुमारजी गो. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व.६	चि. रसिकप्रितमजी
श्रा.व.११	गो. कन्हैयालाल जी गो. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा.व.८	चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

मार्ग.सु.११	गो. वल्लभलालजी
आषा.व.४	गो. गोपेश्वरजी
पौ.व.३	गो. मुकुन्दरायजी
	गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो.व.१	चि. अनुरागजी
	गो. गोपेश्वरजी के लालजी १
फा.व.६	चि. वत्सलराजजी
	चि. अनुरागरायजी के लालजी १
आसो.व.७	चि. पुरूषोत्तमरायजी
	गो. मुकुन्दराय जी के लालजी १
आसो.कृ.१२	चि. पीताम्बर रायजी

बड़ोदरा, शेरगढ़

का.व.४	गो. द्वारकेशजी
	गो. द्वारकेश जी के लालजी २
मा.व.१२	चि. आश्रयकुमार जी
ज्ये.सु.८	चि. शरणकुमार जी
	चि. आश्रयकुमार जी के लालजी १
का.कृ.४	चि. यदुराजजी

बड़ोदरा, सूरत

चै.सु.११	गो. मथुरेशजी
पौ.व.५	गो. प्रभुजी
	गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु.६	चि. योगेशकुमारजी
भा.व.२	चि. द्रुमिलकुमारजी
	गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १
	चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी-जामनगर-नडियाद

ज्ये.सु.५	गो. हरिरायजी
फा.व.१४	गो. व्रजरत्नजी
पौष सु.६	गो. नवनीतरायजी
आषा.सु.८	गो. बालकृष्णजी
आषा.सु.१५	गो. मुकुट बावा
फा.व.१२	गो. शरदकुमारजी
फा.सु.१५	गो. उत्सवजी
आश्वि.शु.६	गो. पुरुषोत्तमलालजी
का.शु.४	गो. गोपेशरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
का.व.१२	चि. व्रजवल्लभजी
	गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि.सु.७	चि. गोकुलोत्सवजी
	गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये.सु.१०	चि. अंजनरायजी
	बालकृष्णजी के लालजी १
पौ.सु.१	चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ.व.६	गो. प्राणवल्लभजी गो. प्राणवल्लभलालजी के लालजी २
का.शु.११	चि. व्रजवल्लभजी
चै.व.११	चि. जयवल्लभ जी
	चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै.कृ.११	चि. कृतार्थ बावा
भा.सु.५	गो. रसिकवल्लभजी

	गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी २
मा.शु.५	चि. समर्पण बावा
आ.सु.६	चि. प्रागट्य कुमार जी
का.सु.६	गो. अक्षयकुमारजी
आषा.सु.१४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी ३
माघ व.६	चि. गोपाललालजी
	चि. गोपाललालजी के लालजी १
फा.कृ.१२	चि. अक्षतकुमारजी
का.सु.५	चि. व्रजभूषणलालजी
	चि. ब्रजभूषणलालजी के लालजी १
आश्वि.शु.४	चि. ऋषभकुमारजी
ज्ये.सु.११	गो. प्रबोधकुमारजी
	गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी २
भा.सु.८	चि. अभिषेककुमारजी
	चि. अभिषेककुमारजी के लालजी १
आषा.कृ.१३	चि. रक्षितकुमारजी
भा.सु.४	चि. रत्नेशकुमारजी
	चि. रत्नेशकुमारजी के लालजी १
वै.शु.२	चि. यदुनाथजी
मार्ग.व.२	गो. संदीपकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३
आसो.सु.१	चि. प्रणयकुमारजी
	प्रणयकुमारजी के लालजी २
फा.शु.१२	गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु.७	गो.चि. वृजरायजी
पौ.व.६	चि. परितोषकुमारजी

मार्ग.व.८	चि. पंकजकुमारजी
वाराणसी	
मार्ग.सु.२	श्याम मनोहरजी
	गो. श्याममनोहरजी के लालजी १
मार्ग.कृ.६	गो. चि. प्रियेन्दु बावा, गो. चि. प्रियेन्दु बावा के लालजी २
मार्ग.कृ.१३	चि. परिवृढ़ बावा
माघ.कृ.१०	श्री श्रृंगार बाबा
अहमदाबाद	
का.सु.१२	चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २
आसो.व.१०	चि. तिलक बावा
आश्वि.शु.१	गो.चि. आभरण बावा
	गो.चि. तिलक बावा के लालजी २
ज्ये.सु.२	गो. चि. निवेदन बावा
आ.व.१०	गो.चि. आभुषणजी बावा
मुम्बई	
आ.सु.५	गो. मनमथरायजी
मार्ग.व.६	गो. नीरजकुमारजी
	गो. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै.व.१४	चि. गोविन्दरायजी
का.व.१३	गो. रमेशचन्द्रजी
माघ सु.६	गो. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ व.६	चि. रघुनाथजी
	चि. रघुनाथजी के लालजी २
भा.सु.५	चि. गोपीनाथजी दिक्षीत
मार्ग.सु.२	चि. नागरमोहनजी

माघ व.६	गो. यदुनाथजी
फा.सु.१५	गो. गोकुलनाथजी
	गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
पौ.व.४	गो. मधूसुदन जी
आषा.सु.२	गो. कृष्णकान्तजी
	चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा.शु.११	चि. गिरिधरलालजी
मार्ग.सु.४	गो. गोकुलनाथजी
माघ.सु.६	गो. घनश्यामलालजी
	गो. घनश्यामलाल जी के लालजी १
भा.कृ.८	चि. वृजानंदलालजी
आषा.सु.११	गो. ललितत्रिभंगीजी
	गो. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा.सु.८	चि. व्रजवल्लभलालजी

मार्ग.व.४	गो. हृषीकेशजी
	गो. हृषीकेशजी के लालजी २
आसो.सु.१	गो. राजीवलोचनजी
वै.सु.७	रविरायजी
वै.व.४	गो. योगेशकुमारजी
	गो. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा.व.३०	चि. बालकृष्णलालजी
का.व.४	गो. कमलेशकुमारजी गो. कमलेशकुमारजी के लालजी १
फा.व.६	चि. मुकुन्दरायजी
आसो.सु.१	गो. मनमोहनजी
आषा.व.३०	गो. हिरण्यगर्भजी गो. हिरण्यगर्भजी के लालजी १
आ.कृ.११	चि. हैयंगवीनजी
	गो. मधुदसूदनजी के लालजी २

श्रीनाथजी मन्दिर

चै.सु.१०	चि. कृष्णचन्द्रजी
पौ.व.५	चि. वल्लभदीक्षितजी
आसो.सु.११	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी २
मा.व.१०	चि. गो. श्री भक्तवत्सल बावा
फा.व.२	चि. गो. श्री तिलकराय बावा

कान्दीवली-मुम्बई

ज्ये.सु.२	गो. द्वारकेशलालजी
कार्ति.सु.७	गो. पुरूषोत्तमजी
	गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी १
आसो.व.२	गो. श्री विट्ठलराय जी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो.सु.३	गो. रसिकवल्लभजी
चै.सु.६	गो. महेन्द्रकुमारजी
	गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १

आसो.सु.१३	चि. शिशिरकुमारजी
	चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ सु.८	गो. माधवरायजी
मार्ग.सु.६	गो. चन्द्रगोपालजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
श्रा.कृ.६	चि. अनिरूद्धलालजी चि. अनिरूद्धलालजी के लालजी १
भा.सु.७	चि. स्वानन्द बावा
आसो.व.१४	गो. शैलेशकुमारजी
	श्री शैलेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.सु.३	चि. लाडिलेशजी चि. लाडिलेशजी के लालजी १
चै.कृ.१३	चि. अविचलरायजी
	गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा.व.४	चि. मुरलीधरजी

श्रीनाथजी मन्दिर

बोरीवली-जामखंभालिया

श्रा.व.१३	गो. राकेशकुमारजी
	गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का.व.१३	गो. त्रिभंगीलालजी
चै.व.११	गो. व्रजप्रियजी
माघ व.१०	गो. व्रजनाथलालजी
	गो. व्रजनाथलालजी के लालजी १
श्रा.सु.७	चि. ध्येयरायजी
वै.सु.१३	गो. राजीवलोचनजी
मार्ग.सु.२	गो. गोविन्दरायजी
	गो. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा.सु.२	चि. रूचिरबाबा
	चि. रूचिरबाबा के लालजी १
का.व.८	चि. वल्लभलालजी
ज्ये.सु.१५	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी १
फा.सु.२	चि. गो. द्वारकेशलालजी
	गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३
आषा.व.५	चि. देवकीनन्दनजी
	चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १
चै.व.११	चि. गो. वेदांग बावा
ज्ये.सु.४	चि. कुंजरायजी
श्रा.कृ.३	चि. गो. गिरिधरजी
	गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का.सु.३	चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा.व.३	गो. दानीरायजी
	गो. दानीरायजी के लालजी ४

का.सु.५	चि. पुरूषोत्तमजी
आषा.सु.११	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी
	चि. व्रजेन्द्रकुमार जी के लालजी ३
भा.व.१	चि. ब्रजनाथजी
आश्वि.व.१३	चि. मधुरेशजी
चै.शु.६	चि. कृष्णराय जी
का.शु.१५	चि. विशालकुमारजी

पूना-मद्रास

चै.सु.४	गो. अजयकुमार जी
	गो. अजयकुमार जी के लालजी १
भा.कृ.६	चि. वागधीशकुमारजी
फा.व.११	गो. भरतकुमारजी
	गो. भरतकुमारजी के लालजी १
वै.व.२	चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै.सु.१४	गो. रणछोड़लालजी
माघ व.६	गो. अनिरूद्धलालजी
	गो. अनिरूद्धजी के लालजी १
वै.सु.१४	चि. रसिकरायजी
	चि. रसिकरायजी के लालजी १
श्रा.कृ.७	चि. अचिन्त्य जी
आ.कृ.६	गो. चन्द्रगोपालजी
का.सु.४	गो. भूषणजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी २
का.सु.१२	चि. अन्वयजी
श्रा.सु.५	चि. प्रत्यय जी
	गो. भूषणजी के लालजी २

फा.कृ.३	चि. अव्ययजी
का.सु.८	चि. गोपालजी
का.व.४	गो. व्रजेन्द्रजी
	गो. व्रजेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.२	चि. ब्रजवल्लभजी
पौ.कृ.७	चि. पुण्यश्लोकजी
आश्वि.कृ.७	गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)
	गो. श्री सारंगजी के लालजी १
फा.सु.१४	चि. उत्सव बावा

पोरबन्दर

वै.सु.७	गो. हरिरायजी
	हरिरायजी के लालजी १
मा.शु.११	चि. जयगोपालजी
	चि. जयगोपालजी के लालजी १
आश्वि.कृ.१	चि.भावनेशरायजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग.व.१०	गो. रसिकरायजी
पौ.कृ.८	श्री श्याम मनोहर जी
	गो.रसिकरायजी के लालजी २

वै.व.१०	चि. चन्द्रगोपालजी
माघ व.१२	गो. वसन्तकुमारजी
का.सु.६	गो. विशालकुमारजी
	गो. वसन्तकुमारजी के लालजी १
भा.व.१२	चि. श्रीकृष्णरायजी
फा.कृ.५	गो. अभिषेककुमारजी
	गो. अभिषेककुमारजी के लालजी १
चै.कृ.११	चि. द्वारकेशलालजी
वै.शु.३	गो. अक्षयकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी १
का.शु.६	चि.रमणेशजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
आषा.सु.७	चि. मिलनकुमारजी
	चि. मिलनकुमारजी के लालजी ३
मार्ग.शु.८	चि. गोकुलनाथजी
आश्वि.कृ.६	चि. विट्ठलेशरायजी
आश्वि.शु.११	चि. मथुरेशजी

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की गुर्जरमासानुसार सूचना

''श्रावण''		
व.१	श्री गोवर्द्धनलालजी	नाथद्वारा
व.७	श्री रणछोड़लालजी	बम्बई
व.८	श्री कन्हैयालालजी	गोकुल
व.९	श्री कृष्णजीवनजी	चैन्नई
व.१२	श्री प्रद्युम्नलालजी	वेटद्वार
व.१४	श्री गोपाललालजी	कांकरोली
व.३०	श्री कन्हैयालालजी	बम्बई
सु.२	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
सु.११	श्री गिरधारीलालजी	मुम्बई
सु.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	चापासेनी
सु.१२	श्री गोकुलेशजी	जूनागढ़

''भाद्रपद''		
सु.४	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.७	श्री व्रजरत्नलालजी	सूरत
सु.८	गो. व्रजजीवनजी	कान्दीवली मुम्बई
सु.९	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.१०	श्री दामोदरलालजी	बम्बई
सु.११	श्री व्रजवल्लभजी	जूनागढ
सु.१२	श्री गोकुलनाथजी	बम्बई
सु.१२	श्री अनिरूद्धलालजी	नडियाद
सु.१३	श्री पुरूषोत्तमलालजी	कोटा
व.१	श्री मदनमोहनजी	मुम्बई
व.३	श्री गोवर्द्धनलालजी	बम्बई
व.३	श्री दामोदरलालजी	मथुरा
व.४	श्री चन्द्रगोपालरायजी	बडौदरा सूरत

व.७	श्री वल्लभलालजी	बड़ौदा
व.७	श्री घनश्यामलालजी	सूरत
व.८	श्री मुरलीधरजी	कोटा
व.८	श्री मुरलीधरजी	बेटद्वार
व.१०	श्री व्रजनाथजी	विलेपार्ले
व.११	श्री नृसिंहलाल जी	शेरगढ़
व.१२	श्री गोविन्दरायजी	कोटा

''आश्विन''

सु.७	श्री हरिरायजी	मुम्बई
सु.११	श्री कृष्णकुमारजी	कामवन
व.३	श्री घनश्यामलालजी	मुम्बई
व.५	श्री व्रजनाथजी	जामनगर
व.६	श्री मगनलालजी	सूरत
व.१०	श्री व्रजरायजी श्री नटवरगोपालजी	अहमदाबाद

व.१०	श्री कन्हैयालालजी	मथुरा, पोरबंदर
व.१३	श्री व्रजपाललालजी	मथुरा
व.१४	श्री. जयदेवलाल जी	वीरगाम
व.१४	श्री प्रियव्रतरायजी	मुम्बई

''कार्त्तिक''

सु.१	श्री गोवर्द्धनेशजी	बम्बई
सु.१	श्री रमणलालजी	मथुरा
सु.३	श्री प्रदीपकुमारजी	मथुरा
सु.४	श्री मधुसूदनलालजी	अमरेली
सु.६	श्री पुरूषोत्तमलालजी	अमरेली
सु.७	श्री लालमणिजी	कोटा
सु.७	श्री जीवनेशजी	मुम्बई
सु.८	श्री गोपाललालजी	मथुरा
सु.१०	श्री गोकुलाधीशजी	बम्बई
सु.११	श्री श्यामसुन्दरजी	बम्बई

सु.१३	श्री गोविन्दरायजी	कामवन
सु.१४	श्री जीवनलालजी	कोटा
सु.१५	श्री गिरधरलालजी	काशी
व.२	श्री पुरूषोत्तमलालजी	जूना
व.७	श्री गोविन्दलालजी	नाथद्वारा
व.८	श्री राजेन्द्रकुमारजी	मथुरा
व.१०	श्री उत्तमश्लोकजी	मुम्बई
व.१४	श्री जयदेवजी	वीरमगाम

''मार्गशीर्ष''

सु.१३	श्री गिरधरलालजी	नाथद्वारा
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	मांडवी
व.१	श्री दाऊजी (राजीवजी)	नाथद्वारा
व.३	श्री विट्ठलनाथजी	चापासेनी
व.३०	श्री गोविन्दरायजी	पोरबंदर

'पौष''

सु.४	श्री गोकुलनाथजी	वेरावल
सु.५	श्री गोपेश्वरलालजी	नाथद्वारा

सु.६	श्री दामोदरलालजी	नाथद्वारा
सु.७	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
सु.१०	श्री कल्याणरायजी	बम्बई
सु.१०	गो. श्रीवृजेशकुमारजी	कांकरोली
सु.१२	श्री विट्ठलनाथजी	बम्बई
सु.१३	श्री वल्लभलालजी	बोरी., जाम.
व.६	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
व.६	श्री विट्ठलनाथजी	मथुरा
व.११	श्री रणछोड़लालाजी	राजकोट
व.१२	श्री व्रजभूषणलालजी	नड़ियाद

''माघ''

सु.४	श्री कृष्णकुमारजी	मथुरा
सु.६	श्री अनिरूद्धलालजी	मुम्बई
सु.१३	श्री घनश्यामजी	कामवन
व.२	श्री व्रजभूषणलालजी	कांकरोली
व.२	श्री नटवरलालजी	मांडवी
व.४	श्री नृत्यगोपालजी	मुम्बई
व.५	श्री कल्याणरायजी	सूरत

''फाल्गुन''

सु.३	श्री गिरधरजी	सूरत
सु.४	श्री गोकुलनाथजी	गोकुल
सु.८	श्री रमणजी	कामवन
सु.११	श्री गोविन्दरायजी	सूरत
सु.१२	श्री काकागिरधरजी	नाथद्वारा
सु.१३	श्री मुरलीमनोहरजी	मुम्बई
सु.१४	श्री मधुसुदनलालजी	सूरत
सु.१५	श्री माधवरायजी	पोरबंदर
व.५	श्री चिम्मनलाल जी	बम्बई
व.१३	श्री व्रजरायजी	अहमदाबाद
व.१३	श्री गोकुलनाथजी	माण्डवी-कच्छ
व.३०	श्री कृष्णचन्द्रजी	मुम्बई

''चैत्र''

सु.१०	श्री गोपाललालजी	कोटा-कड़ी
सु.१३	श्री मुरलीधरजी	काशी
सु.१४	श्री पुरुषोतमजी	मुम्बई
सु.१५	श्री मुरलीधरलालजी	बोरीवली
व.१४	गो.यशोदानन्दनजी	बोरीवली

''वैशाख''

सु.३	श्री देवकीनन्दनजी	कामवन
सु.६	श्री किशोरचन्द्रजी	जूनागढ़
सु.८	श्री यदुनाथजी	मथुरा
सु.१०	श्री मुरलीमनोहरजी	बडोदरा
सु.११	श्री यदुनाथरायजी	जतीपुरा
सु.१५	श्री माधवरायजी	मुम्बई
व.१	श्रीद्वारकेशजी	पोरबन्दर
व.५	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
व.७	श्री शरदकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
व.११	श्री देवकीनन्दनजी	इन्दौर
व.१२	श्री दीक्षितजी	बम्बई
व.१४	श्री व्रजाधीशजी	मुम्बई
व.१४	श्री विट्ठलेशरायजी	पोरबंदर
व.३०	श्री वागीशरणजी	बम्बई

''ज्येष्ठ''

सु.१	गो. मथुरेशजी	वीरगाम
सु.४	श्री त्रिविक्रमरायजी	कोटा
सु.५	श्री जीवनजी	बम्बई
सु.८	श्री मुकुन्दरायजी	राजकोट
सु.९	श्री गिरधरजी	कोटा
सु.११	श्री कल्याणरायजी	मथुरा
सु.१२	श्री द्वारकेशलालजी	कोटा
सु.१३	श्री जीवनलालजी	पोरबंदर
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	बम्बई
सु.१५	श्री जीवनलालजी	काशी
व.४	श्री गिरधरलालजी	कामवन
व.८	श्री घनश्यामलालजी	मांडवी
व.१२	श्री ब्रजरमणलालजी	मथुरा
व.१४	श्री वागधीशजी	अमरेली

''आषाढ़''

सु.२	श्री मगनलालजी	वेरावल
सु.२	श्री गोपाललालजी	कामवन
सु.३	श्री गोपालालजी	कांकरोली
सु.३	श्री मथुरेशजी	मुम्बई
सु.३	श्री वल्लभलालजी	कामवन
सु.३	श्री दामोदरलालजी	चापां
सु.५	श्री दामोदरलालजी	राजकोट
सु.५	श्री विट्ठलेशरायजी	कां.मुम्बई
सु.८	श्री चिमनलालजी	मांडवी, गो.
सु.१२	श्री मथुरेशकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
सु.१३	श्री रघुनाथजी	जूनागढ़
सु.१४	गो. देवेन्द्रकुमारजी	नाथद्वारा
व.१	श्री गोकुलेशरायजी	जूनागढ़
व.३	श्री नटवरगोपालजी	(मु.-वेरावल - पोरबन्दर)
व.८	रसिकरायजी	चापासेनी नडियाद
व.८	श्री यदुनाथजी	सूरत
व.८	श्री घनश्यामलालजी	कामवन
व.१०	श्री व्रजरत्नलालजी	नडियाद
व.११	श्री विट्ठलेशरायजी	इन्दौर
व.११	श्री बालकृष्णलालजी	सूरत
व.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	बम्बई
व.१३	श्री बालकृष्णजी	कांकरोली
व.१३	श्री कृष्णरायजी	इन्दौर
व.१३	श्री गोकुलेशजी	बम्बई

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज

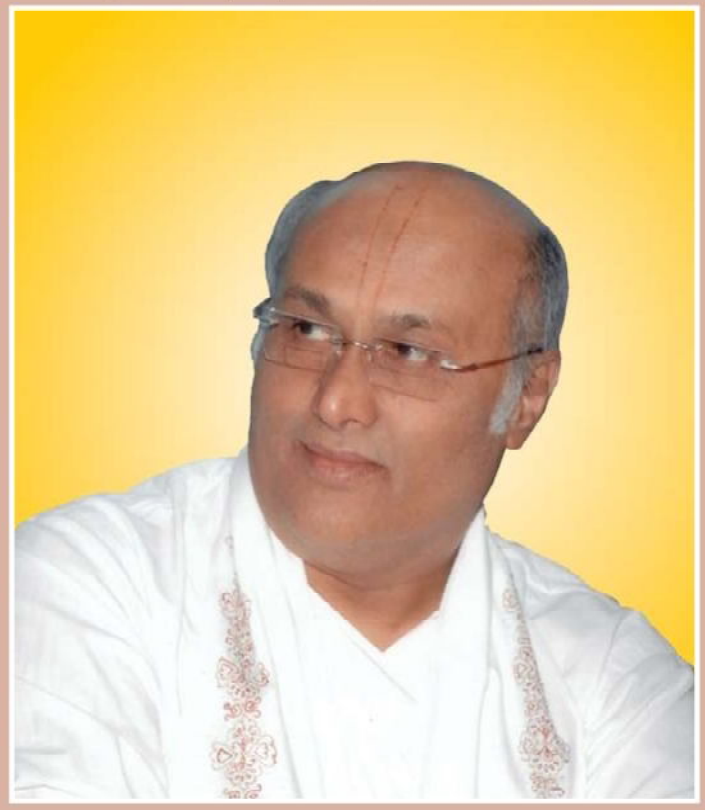

नाथद्वारा

जन्मतिथि - फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत् - २००६

जन्म तारीख - २४ फरवरी
सन - १९५०

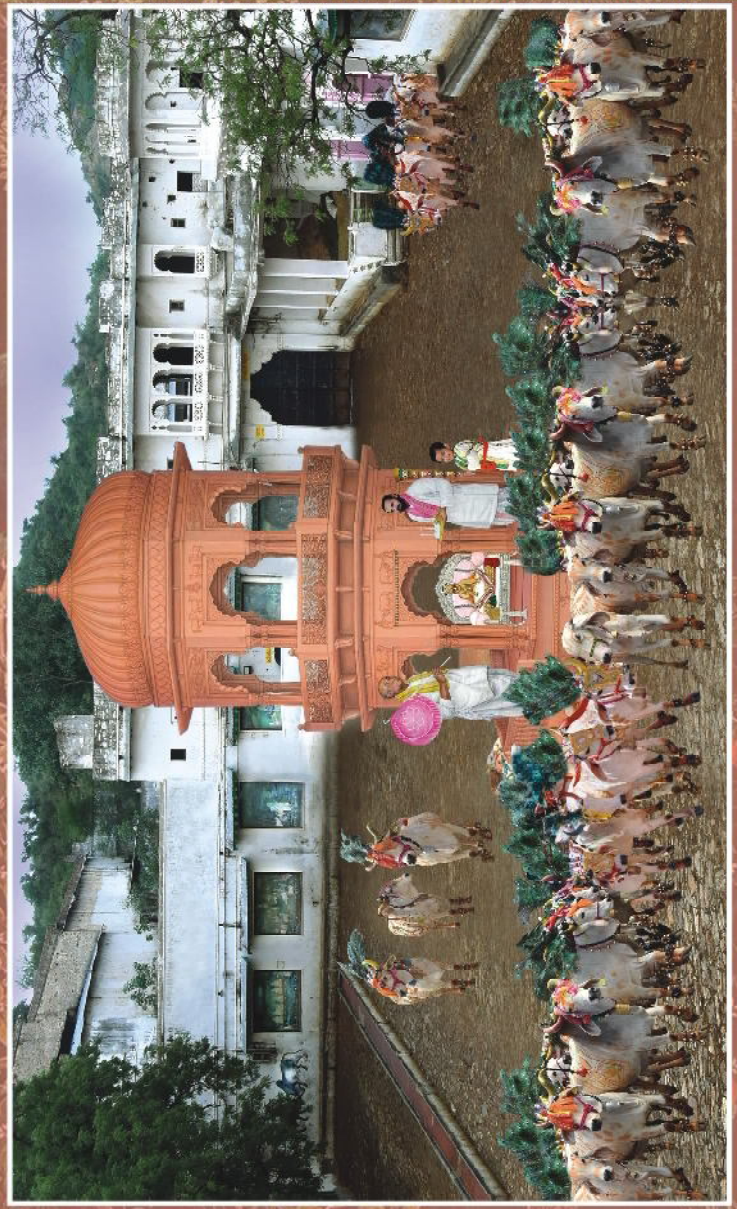

अधिक श्रावण कृष्णपक्ष ११ शनिवार दिनांक १२.०८.२०२३ को पूज्यपाद गोस्वामी तिलकायित
श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज तथा गोस्वामी वि. १०५ श्री विशाल बावा साहब द्वारा
श्रीनाथजी गौशाला श्री नाथद्वारा में श्री नवनीतप्रिय प्रभु को पधराकर अलौकिक मनोरथ का आयोजन किया गया
जिसमें नाथद्वारा नगरवासी एवं हजारो वैष्णवों ने प्रभु के दिव्य दर्शन का लाभ प्राप्त कर आनंदित हुए ।